ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 4, Issue 3, March 2023

शक्ति-युक्ति से सज्जित शासक शिवाजी का जीवन दर्शन

डॉ .गोविन्द प्रसाद मिश्र

एसोसिए टप्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, म.प्र.

drgovindmishra@gmail.com

शोध सार :

अपने समय, समाज एवं संस्कृति की चेतना को मथने और झंकृत करने वाले मराठा साम्राज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी राव भोसले आज से लगभग चार सौ साल पहले 20 अप्रैल सन 1627 को पुणे महाराष्ट्र के पास शिवनेर के पहाड़ी किले में शाहजी भोंसले एवं जीजाबाई के सुपुत्र के रूप में जन्म लेकर अपने चुम्बकीय व्यक्तित्व व अनुकरणीय कृतित्व से भारतीय जनमानस में उस प्रदीप्त सूर्य की तरह स्थापित हुए जिनकी आभा आज भी नित नये रूप में आलोकित है | वह अंतिम हिंदू शासक थे जिन्होंने हिंद स्वराज की स्थापना के लिए मुगलों के खिलाफ लड़े तथा अपनी जननी एवं जन्मभूमि का सिर गर्व से ऊंचा किया। उन्होंने सत्ता के विकेंद्रीकरण और शासन के लोकतांत्रिकरण को बढ़ावा दिया। उन्होंने व्यक्ति-केंद्रित शासन-व्यवस्था के बजाय तंत्र-आधारित व्यवस्था खड़ा करने का सराहनीय प्रयास किया | वर्तमान समय में दुनियाभर में शासन और सत्ता के विकेंद्रीकरण पर बातें होती हैं , इसके लिए बड़े-बड़े सेमिनार और व्याख्यान आयोजित होते हैं किन्तु सैकड़ों वर्ष पूर्व शिवा जी महाराज ने अपने शासन की बागडोर सुचारु रुप से चलाने के लिए जिस तरह से सत्ता का विकेंद्रीकरण किया उससे समाज आज भी प्रेरणा ले सकता है। उन्होंने कोरी आदर्शवादिता और हठधर्मिता के स्थान पर ठोस व्यावहारिकता को अपनाया और इस हेतु न तो निजी एवं राष्ट्रीय जीवन के उच्चादर्शों व मूल्यों को छोड़ा , न ही प्रजा के हितों और समय की माँग की उपेक्षा की । वस्तुतः उनका लक्ष्य राष्ट्र और धर्म रक्षार्थ विजय और केवल विजय रहा जिसमे वे सफ़ल भी रहे।

छत्रपति शिवाजी महाराज ने स्वराज्य, स्वधर्म, स्वभाषा और स्वदेश के पुनरुत्थान के लिए अतुलनीय कार्य किया है । उन्होंने अपने समय और समाज की चेतना को तो प्रभावित किया ही, आने वाली पीढ़ियों एवं स्वतंत्रता सेनानियों के लिए भी वे प्रेरणापुंज बने । उनकी अखंड भारत की कल्पना और इस हेतु प्रयत्न पुरुषार्थ भरा उनका जीवन दर्शन हमें देशभक्ति की प्रेरणा देता है।

ISSN (Online) 2582-9327
IJARSCMT
International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology
Impact Factor: 5.781
Volume 4, Issue 3, March 2023

उनके आदर्शों पर चलकर हम आत्मनिर्माण से राष्ट्र निर्माण के आदर्श को अपनाकर देश की सर्वतोभावेन उन्नति में सहयोग कर सकते हैं, जो समय की मांग भी है |

कीवर्ड - जीवन दर्शन ,विकेंद्रीकरण, आत्मनिर्माण, राष्ट्र निर्माण, धर्म रक्षार्थ विजय

शिवाजी महाराज मात्र एक व्यक्ति या शासक नहीं थे अपितु , वे एक महान विचारक, सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक, हिन्दू धर्म प्रहरी , एक महान प्रेरणापुंज और एक युगप्रवर्तन के शिल्पकार थे जिन्हें देखते ही उनके आध्यात्मिक गुरु एवं राजनीतिक दिशा-निर्देशक समर्थ रामदास ने स्पष्ट कर दिया था कि उन्हें शिवाजी में शक्ति और युक्ति से सज्जित एक धर्म रक्षक की छवि दिखती है |

प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में “शिवाजी महाराज केवल महाराष्ट्र के ही नहीं बल्कि समस्त राष्ट्र के थे, उन्होंने महापुरुषों की शिक्षा से प्रेरणा ली थी । व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा से स्वयं के लिए राज्य की स्थापना करना; उनकी इच्छा नहीं थी । उन्होंने तत्कालीन शासन व्यवस्था के गुण-दोषों का अध्ययन किया । परिणामस्वरूप अपनी विशिष्ट नीति और शासन व्यवस्था निर्धारित की । शिवाजी महाराज स्वयं धर्मनिष्ठ हिंदू थे पर अन्य धर्मों के प्रति उनकी भावना उदार थी ।[i] वे केवल मराठा राष्ट्र के निर्माता नहीं थे। वे मध्ययुगीन भारत के सबसे महान रचनात्मक जीनियस भी कहलाए। राज्यों का पतन हुआ, साम्राज्य विखंडित हुए, वंश लुप्त हो गए परंतु एक सच्चे, “नायक के रूप में राजा” शिवाजी जैसे लोगों की स्मृति सारी मानव जाति के लिए अखंड ऐतिहासिक विरासत बन गई' | [ii]

शिवाजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के प्रभाव से कवि भूषण ने औरंगज़ेब के दरबार की नौकरी -चाकरी को लात मार दी। उन्होंने भरे दरबार में कहा- "कवि बेचा नहीं जाता। जो उज्ज्वल चरित्र और स्तुति योग्य है, उसी की स्तुति करता है। तुम स्तुति के लायक नहीं हो।" वस्तुतः शिवाजी महाराज के जीवन का उद्देश्य भी यही था। वे अपने उद्यम पुरुषार्थ, सोच-संकल्प, नीति-नेतृत्व से संपूर्ण देश में सांस्कृतिक चेतना का संचार करना चाहते थे। कवि भूषण ने औरंगजेब के दरबार की शोभा बढ़ाने की बजाय अपनी संस्कृति, अपने धर्म की रक्षा के लिए संघर्ष एवं पराक्रम की परंपरा को आगे बढ़ाने वाले वीर शिरोमणि महाराज शिवाजी पर "शिवा बावनी" लिखी । वे लिखते हैं कि -

ISSN (Online) 2582-9327
IJARSCMT
International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology
Impact Factor: 5.781
Volume 4, Issue 3, March 2023

इंद्र जिम जंभ पर बाड़व ज्यौं अंभ पर रावन सदंभ पर रघुकुलराज है।
पौन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर ज्यौं सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है।
दावा द्रुमदंड पर चीता मृगझुँड पर भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम-अंस पर कान्ह जिम कंस पर यौं मलेच्छ-बंस पर सेर सिवराज है॥ [iii]

अर्थात - जिस प्रकार इंद्र ने जंभासुर नामक दैत्य पर आक्रमण करके उसे मारा था, जिस प्रकार बाडवाग्नि समुद्र के पानी को जलाकर सोख लेती है, अभिमानी एवं छलीकपटी रावण पर जिस प्रकार श्रीराम ने आक्रमण किया था, जैसे बादलों पर वायु के वेग का प्रभुत्व रहता है, जिस प्रकार शिवजी ने रति के पति कामदेव को भस्म कर दिया था, जिस प्रकार सहस्रबाहु राजा को परशुराम ने आक्रमण कर मार दिया था, जंगली वृक्षों पर दावाग्नि जैसे अपना प्रकोप दिखलाती है, जिस प्रकार वनराज सिंह का हिरणों के झुंड पर आतंक छाया रहता है अथवा हाथियों पर मृगराज सिंह का आतंक रहता है, जिस प्रकार सूर्य की किरणें अंधकार को समाप्त कर देती हैं , दुष्ट कंस पर जिस तरह आक्रमण करके भगवान् श्रीकृष्ण ने उसका विनाश कर दिया था, उसी प्रकार सिंह के समान शौर्य एवं पराक्रम वाले छत्रपति शिवाजी का मुग़लों के वंश पर आतंक छाया रहता है। अर्थात् वे मुग़लों का प्रबल विरोध करते है और वीरता पूर्वक उन पर आक्रमण कर विनाश लीला करते हैं । उनके शौर्य से समस्त मुग़ल भयभीत रहते हैं |

छत्रपति शिवाजी एक कट्टर देशभक्त हिन्दू धर्म रक्षक शासक और कुशल सेनापति होने के साथ साथ , एक चतुर कूटनीतिज्ञ व कुशल रणनीतिकार भी थे | उन्होंने संतों की प्रेरणा से एक हाथ में माला तो दूसरे हाथ में भाला की रणनीति अपनाई | उन्होंने शास्त्रों के साथ-साथ शस्त्रों की महत्ता भी समझी जिसके निर्माण के आयुध कल-कारखाने भी स्थापित किए । धर्मांतरितों की हिन्दू धर्म पुनः घर वापसी का समर्थन व मान्यता देने वाले सम्भवतः वे प्रथम शासक थे | शिवाजी पहले आधुनिक भारतीय शासक थे जिन्होंने चतुरंगिणी सैन्य बल का गठन किया था। वे नौसेना के जनक थे। उनका अष्टप्रधान बेजोड़ मंत्रीमंडल और शासन तंत्र का उदाहरण था। शिवाजी योग्यता एवं पात्रता को विशेष महत्त्व देते थे | उन के शासन काल में वंशवाद को नजरअंदाज कर पेशवा का चलन, वास्तव में योग्यता का सम्मान था। वे छापामार गुरिल्ला युद्ध के प्रस्तावक थे किन्तु उन्होंने कभी भी धार्मिक स्थानों या वहा पर रहने वाले लोगो के घरो में कभी छापा नही मारा। उन्होने अपने निहित स्वार्थ के लिए कोई युद्ध नहीं किया | उनके लिए राष्ट्र प्रथम था | उनकी विशिष्टता थी कि वह अपने राज्य के लिए बाद में लड़ते थे, पहले भारत के लिए लड़ते थे।, वह महिलाओं के सम्मान के कट्टर समर्थक थे।

ISSN (Online) 2582-9327
IJARSCMT
International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology
Impact Factor: 5.781
Volume 4, Issue 3, March 2023

शिवाजी के बहुआयामी व्यक्तित्व को अनेक रूपों में देखा और बताया गया है | मेधा देशमुख- भास्करन के शब्दों में "शिवाजी एक पौराणिक और ऐतिहासिक हस्ती के तौर पर, विविध प्रकार के भावों को जगाते रहे हैं| वे उपदेवता की तरह पूजे गए, एक विद्रोही और लुटेरे की तरह कलंकित हुए, उन्हें पहाड़ी चूहा कहते हुए उनका उपहास भी किया गया" [iv], डच लोगों ने शिवाजी को चतुर लोमड़ी कहा तो अंग्रेज़ों ने पूर्वी हिस्सों के सबसे राजनीतिक राजकुमारों में से एक माना। सूरत में अंग्रेज़ पादरी एस्केलियट ने शिवाजी को अफ़ज़ल ख़ाँ की मौत के बाद विश्वास न करने योग्य, गुप्त, द्रोही और छली कहा |[v]

यद्यपि वे सभी धर्मों का सम्मान करते थे, किन्तु भारतीय सांस्कृतिक जीवन मूल्यों से संचित हिन्दू धर्म के राज्य की स्थापना ही उनका उद्देश्य था और साधु-संतों की शिक्षा ही उनके लिए जीवन जीने का मार्ग। छत्रपति शिवाजी का मानना था कि भारत एक देव संस्कृति प्रधान सनातन देश है, यह हिंदुस्थान है, और इस भारत भूमि पर भारतीय राज ,अपना राज (स्व राज) होना ही चाहिए, अपने सत्य सनातन धर्म, दर्शन एवं संस्कृति का विकास होना ही चाहिए, भारतीय जीवन मूल्यों को चरितार्थ करना ही चाहिए... शिवाजी महाराज का जीवनसंघर्ष इसी सोच को प्रस्थापित करने के लिए था। वे बार-बार कहा करते थे, " इस तरह का अपना राज्य हो, यह परमेश्वर की इच्छा है। अर्थात स्वराज्य संस्थापना यह ईश्वरीय कार्य है। मैं ईश्वरीय कार्य का केवल एक सिपाही मात्र हूँ।" वे स्वयं को राज्य का स्वामी न समझकर उसका संरक्षक- ट्रस्टी समझते थे। राज्य का स्वामी तो वे ईश्वर को ही मानते थे। इसीलिये उन्हें उपभोग शून्य स्वामी शासक भी कहा गया है | शिवाजी महाराज केवल एक व्यक्ति नहीं थे, वे एक विचार थे, संस्कार थे, संस्कृति थे, पथ-प्रदर्शक, क्रांति की मशाल थे, युगप्रवर्तक शिल्पकार थे। वे न केवल एक कुशल सेनापति, एक कुशल रणनीतिकार और एक चतुर कूटनीतिज्ञ थे बल्कि एक कट्टर देशभक्त भी थे | महादेव गोविंद रानाडे के शब्दों में *"नेपोलियन प्रथम की तरह शिवाजी अपने समय में एक महान संगठनकर्ता और नागरिक संस्थानों के निर्माता थे।* [vi]

छत्रपति शिवाजी एक कट्टर देशभक्त हिन्दू धर्म रक्षक शासक और कुशल सेनापति होने के साथ-साथ , एक चतुर कूटनीतिज्ञ व कुशल रणनीतिकार भी थे | उन्होंने संतों की प्रेरणा से एक हाथ में माला तो दूसरे हाथ में भाला की रणनीति अपनाई | उन्होंने शास्त्रों के साथ-साथ शस्त्रों की महत्ता भी समझी जिसके निर्माण के आयुध कल-कारखाने भी स्थापित किए । धर्मांतरित जनों की हिन्दू धर्म में पुनः घर वापसी का समर्थन व मान्यता देने वाले सम्भवतः वे प्रथम शासक थे | शिवाजी पहले आधुनिक भारतीय शासक थे जिन्होंने चतुरंगिणी सैन्य बल का गठन किया था। वे

ISSN (Online) 2582-9327
IJARSCMT
International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology
Impact Factor: 5.781
Volume 4, Issue 3, March 2023

नौसेना के जनक थे। उनका अष्टप्रधान बेजोड़ मंत्रीमंडल और शासन तंत्र का उदाहरण था। शिवाजी योग्यता एवं पात्रता को विशेष महत्त्व देते थे | उनके शासन काल में वंशवाद को नजरअंदाज कर पेशवा का चलन, वास्तव में सुयोग्यता का सम्मान था।

शिवाजी के सिपाही उनके लिए अपने हृदय और आत्मा से समर्पित थे और वे पैसे या पद के लोभ में उन्हें छोड़ कर नहीं जाते थे। जिस दौरान सिपाहियों को पैसे या पद का लोभ दे कर खरीदना सबसे आसान था। उस समय में शिवाजी के पास ऐसी चुंबकीय शक्ति थी जो केवल सच्चे नेताओं में होती है और लुटेरे या धर्म के ठेकेदार कभी उसका दावा भी नहीं कर सकते। उन्होंने जाति, लिंग या रंग के भेद से परे, हर उस चीज़ को अपनी ओर आकर्षित किया जो एक आस का संदेश लाती थी। उनके सलाहकार सभी समुदायों से चुने जाते जो उनके देश की सबसे बड़ी ताक़त थे। उनके एक स्पर्श से छोटे से छोटा इंसान भी ऐसा महसूस करता मानो उसके भीतर एक विशुद्ध अग्नि जल उठी हो |[vii]

शिवाजी के गुरु समर्थ रामदास' थे जिनका वे बहुत आदर मान करते थे। उन्होंने एक ऐसे संप्रदाय की स्थापना की जिसके मूल में ही विजय की भावना छिपी थी। उन्होंने रामदासी संप्रदाय की स्थापना के साथ, न केवल पूजन की अनुपम शैली विकसित की बल्कि जीवन के प्रति एक सामाजिक दृष्टिकोण का प्रचार भी किया जिसे महाराष्ट्र धर्म का नाम दिया गया, इस तरह उन्होंने शिवाजी के लिए अनुकूल वातावरण की सृष्टि की। 'महाराष्ट्र धर्म' के छह नियम थे : 1. संपन्नता की आकांक्षा 2. अपने परिवार का कल्याण 3. लोगों को राह दिखाना 4. नियमित व्यायाम के माध्यम से शारीरिक शक्ति 5. सक्रियता (प्रयास और संघर्ष ही ईश्वर है) 6. स्वराज और स्वधर्म (आज़ादी और अपना धर्म) |[viii]

शिवाजी केवल दूरदर्शी ही नहीं थे अपितु उनके भीतर रणनीति और सैन्यनीति की गहरी और नैसर्गिक समझ भी थी | भारत, रक्षा मंत्रालय, इतिहास विभाग के भूतपूर्व प्रमुख कर्नल (डॉ.) अनिल आठले के अनुसार, "शिवाजी ने भारत में युद्धकला में एक क्रांति ला दी। भारतीय संदर्भ में उनकी नीतियाँ, रणनीति और कौशल अतीत से अलग रहे। पिछले हजारों सालों से हिंसा के बारे में जो सोच चली आ रही थी, उनकी पहल उससे बिलकुल अलग रही। उनकी रणनीति सिद्धांत तीव्र गति और परिवर्तनशील प्रतिरक्षा पर निर्भर करता था। एयर मार्शल जायल (सेवानिवृत्त), जो भारतीय वायु सेना में डिप्टी चीफ भी रहे, उनके अनुसार, 'शिवाजी ने कई तरह से कुछ बुनियादी ढाँचे तैयार किए जो आधुनिक सेनाओं के आधार रहे। उनकी सेना राज्य का दायित्व थी और जंगी घोड़ों के रखरखाव का दायित्व भी राज्य पर ही था। उनके पास एक केंद्रीकृत गुप्तचर तंत्र था और

ISSN (Online) 2582-9327
IJARSCMT
International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology
Impact Factor: 5.781
Volume 4, Issue 3, March 2023

सेनाओं को हर तरह का प्रशिक्षण दिया गया था। नई खोज, रणनीतिपरक विचार, सैन्य संगठन और क्रियात्मक नियोजन इतिहास से भी कहीं परे है।' इससे भी हैरतअंगेज़ बात यह है कि उन्होंने आधुनिक तकनीक और संप्रेषण के साधनों के बिना भी अपने सपने को साकार कर दिखाया। [ix]

शिवाजी उन नेताओं में से थे जिन्होंने अपने अधीनस्थों को नेता बनने के लिए प्रेरित किया। शिवाजी कोई अर्थशास्त्री नहीं थे परंतु उन्होंने भू स्वामित्व प्रथा को बंद किया, मूर्त और अमूर्त संसाधनों का उचित प्रबंधन करते हुए, प्रजा की इस योग्य बनाया कि वह आत्मनिर्भर हो सके। यही वजह थी कि वे लोग सदा शिवाजी के प्रति निष्ठावान बने रहे। शिवाजी प्रजा के साथ अपनी सफलता बांटने में विश्वास रखते थे और यही वजह थी कि लोग उनकी असफलताओं में भी उनके साथ रहते थे 'शिवाजी ने खुद को उस समय की परम सत्ता ही नहीं बल्कि आत्मा को मथ देने वाले एक विचार, उच्चतम मांग व उद्देश्य के रूप में प्रस्तुत किया, जो मराठों को एकजुट करने में सफल रहा। उन्होंने मराठा शक्ति को नहीं बनाया वह तो पहले से उपस्थित थी। उन्होंने सारे देश में छोटे-छोटे केंद्रों में फैली शक्ति को एकजुट किया। उन्होने सबको सामूहिक संकट से सचेत करते हुए, उन्हें एक उच्चतम उद्देश्य के लिए निर्देशित किया। यही उनका सबसे बड़ा गुण तथा देश के प्रति सबसे बड़ी सेवा रही। यही कारण रहा कि वे आज भी लोगों के स्मृति पटल पर छाए हुए है। [x]

सन्दर्भ सूची :

[i] छत्रपति शिवाजी , चौथी कक्षा (परिसर अध्ययन भाग २), पृष्ठ 9,महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे, 411004 प्रथमावृत्ति: 2014

[ii] सरकार ,सर जे., हाउस आफ शिवाजी , स्टडीज एंड डाकुमेंट्स आन मराठा हिस्ट्री , पृष्ठ 104, रायल पिरिअड , कलकत्ता 1955 ,

[iii] कवि भूषण, भूषण ग्रंथावली, पृष्ठ 137, संपादक : आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2017

[iv] मेधा देशमुख-भास्करन , नियति को चुनौती (छत्रपति शिवाजी - एक जीवनी), हिन्दी अनुवाद • रचना भोला 'यामिनी', पृष्ठ -11 प्रकाशक- मंजुल पब्लिशिंग हाउस,भोपाल, 2018

[v] वही .पृष्ठ-136.

[vi] *आप इंडिया वेबसाईट , 12 जून 2022*

[vii] जस्टिस एम.जी.रानाडे , राइज आफ द मराठा पावर , पृष्ठ 25

ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 4, Issue 3, March 2023

[viii] मेधा देशमुख-भास्करन , नियति को चुनौती (छत्रपति शिवाजी - एक जीवनी), हिन्दी अनुवाद • रचना भोला 'यामिनी', पृष्ठ- 222 -223 , प्रकाशक- मंजुल पब्लिशिंग हाउस,भोपाल, 2018

[ix] मेधा देशमुख-भास्करन , नियति को चुनौती (छत्रपति शिवाजी - एक जीवनी), हिन्दी अनुवाद • रचना भोला 'यामिनी', पेज- 266 प्रकाशक- मंजुल पब्लिशिंग हाउस,भोपाल, 2018

[x] जस्टिस एम.जी.रानाडे , राइज आफ द मराठा पावर , पृष्ठ 17 मिनिस्ट्री आफ इन्फार्मेशन एंड ब्राडकास्टिंग , गवर्नमेंट आफ इण्डिया , नई दिल्ली 1974